राजनीतिशास्त्र के साथ मानवीयता के संरक्षणात्मक एवं संवर्धनात्मक नीति पक्ष का अध्ययन ।

परिभाषा :- राजनीति = मानवीयता अर्थात् प्रबुद्धतापूर्ण सत्तात्मक राष्ट्रीयता की अक्षुण्णतावादी नीति = मानवीयता की संरक्षणात्मक एवं संवर्धनात्मक नीति = तन, मन एवं धनात्मक अर्थ की सुरक्षा ।

राष्ट्रीयता :- मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि एवं व्यवस्था की सामरस्यता = परिष्कृत चेतना = मानव जाति, धर्म, कर्म, शिक्षा संस्कारपूर्ण आचार व्यवस्था = जनवादिता, उत्पादनीयता एवं विकास शीलता = समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद, अनुभवात्मक अध्यात्मवाद = निपुणता कुशलता एवं पांडित्य = विवेक व विज्ञान = समाधान, समृद्धि अभय व सह-अस्तित्व = मानवीय संस्कृति - सभ्यता विधि एवं व्यवस्था । संप्रभुता एवं प्रभुसत्ता के समरस्यता के अर्थ में नित्य वर्तमान होता है ।

आधार :-

1. मानव में पाई जाने वाली तन, मन धनात्मक अर्थ की सुरक्षा एवं सदुपयोग की अभिलाषा, संप्रभुता एवं प्रभुसत्ता में सामरस्यता ।
2. मनुष्य का स्वत्व स्वतंत्रता व उनके स्वभाव गति के रूप में मानवीयता की सुलभता ।
3. लाभमूलक या लाभाकांक्षी अथवा लाभोन्मादी राज्य व्यवस्था से सामाजिकता का सिद्ध न होना ।

अनिवार्यता :-

1. प्रत्येक मनुष्य समाज का अविभाज्य अंग होना।
2. व्यक्तित्व व प्रतिभा के संतुलन में ही मनुष्य का चरित्रशील होना ।
3. अर्थ (मूल्यों) का प्रत्येक मनुष्य के लिए अनिवार्य होना ।
4. राष्ट्रीयता अखंडता के अर्थ में जीवन का अविभाज्य तथ्य होना ।

पृष्ठ -2

5. राष्ट्रीयता संप्रभुता, प्रभुसत्ता में सामरस्यता ही मानवीय आचरण का स्पष्ट रूप होना ।

प्रयोजन :- 1. समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व ।

2. न्याय सुलभता व विनिमय सुलभता ।

मानव में, से, के लिए मानवीय राज्यनीति व मानवीय धर्मनीति ।समाज नीति। अविभाज्य रूप में वर्णन योग्य तत्व है । राज्यनीति व्यवस्था में और धर्मनीति आचरण में चरितार्थ होती है । आचरण व व्यवस्था अलग अलग नहीं होती । मानव का अकेले अपने आपमें कोई कार्यक्रम नहीं है । साथ ही मनुष्य का अस्तित्व एक से अधिक के साथ अथवा समग्र के साथ प्रकाशित है । एक से अधिक का तात्पर्य एक से अधिक मनुष्य के सहवास से है । यही परिवार, समुदाय, वर्ग जाति व संप्रदाय होता है । इसके मूल में अनेक जाति रंग नस्ल धर्मवादी संस्कार प्रधानतः पाये जाते हैं । अप्रधानतः भाषा व देश ।भूखंड। भी अलगाव का कारण है। प्रधान बिन्दुओं का निराकरण होने पर अप्रधान समस्यायें समाप्त हो जाती है । प्रधान बिन्दुओं में से प्रथम तीन शरीर की अपेक्षा में चर्चा विचार सीमित है । शरीर सीमा में मनुष्य को सामाजिक या असामाजिक निरूपित करना संभव नहीं है क्योंकि रसायनिक एवं भौतिक परिवर्तन सीमा में जीवन प्रतिष्ठा सिद्ध नहीं होती । मनुष्य शरीर भी अन्यजीव एवं वनस्पति शरीरों के सदृश्य प्राण कोशिकाओं की संरचना है । जीवन्मुक्त प्रतिष्ठा के संबंध में तात्विक एवं सैद्धांतिक चर्चा पहले की जा चुकी है। चैतन्य इकाई जीवन पदों में ख्यात है । जीवन ही शरीर के माध्यम से प्रकाशित होता है । जीवन एक अक्षय शक्ति संपन्न अनुसभूत क्रिया है । जीवन के लिए जन्म एक घटना है । इसका साक्ष्य जीवन शक्ति की अक्षयता एवं गुणात्मकता है । मानव में गुणात्मकता ही अमानवीयता, मानवीयता एवं अतिमानवीयता के रूप में स्पष्ट एवं आंकलित है । ये दोनों तथ्य प्रामाणिक एवं व्यवहारिक है । प्रामाणिकता और व्यवहारिकता शैक्षणिकता का आधार है । अस्तित्व सत्ता में अस्तित्व प्रकृति की अस्तित्वशीलता ही तात्विकता एवं सत्य है । गुणात्मकता का अभीष्ट सत्य में अनुभूति एवं सत्य में प्रकाशन योग्य क्षमता ही है ऐसी क्षमता चैतन्य प्रकृति की अथवा चैतन्य प्रकृति में विकासपूर्वक सिद्ध हो जाती है । इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वस्तु या उपयोगिता मूल्य ही अर्थचिंतन का अथ या इति नहीं है । जीवन शक्तियों में ही इनका परिमाणीकरण व प्रमाणीकरण होता है । अस्तु जीवन, जीवन वैभव के अर्थ में ही अर्थ चिंतन सफल होता है ।

पृष्ठ -3

मानवीयतापूर्ण पद्धति से तन, मन एवं धनात्मक अर्थ की सुरक्षा में सदुपयोग एवं सदुपयोग में सुरक्षा रहती ही है। मानवीय राष्ट्रीयता का तात्पर्य मानवीयता की सुरक्षा अथवा मानव मूल्यों की सुरक्षा से है। मानवीयता पूर्ण संस्कृति व सभ्यता ही अखंड अथवा सार्वभौम राष्ट्रीयता है। सार्वभौम राष्ट्रीयता का अनुसरण एवं आचरण ही अनुक जाति, समुदाय एवं वर्ग सीमा से मुक्त है यही अखंड मानव संस्कृति, सभ्यता व राष्ट्रीयता ही मानव का वैभव है अखंडता में ही आश्वस्त एवं विश्वस्त होता है न कि विखंडन में। अखंड समाज चेतना ही मानवीय सभ्यता एवं स्कृति का संयुक्त रूप है। यही राज्य चेतना के अर्थ में विधि एवं व्यवस्था है। विधि तत्वत: मानव की आचार संहिता है जिसकी स्थापना संरक्षण एवं संवर्धन से विनिमय एवं न्याय व्यवस्था चरितार्थ होती है। यह मानवीयता पूर्ण होने पर सफल, अमानवीयता के अर्थ में असफल, अतिमानवीयता के अर्थ में सफलता का स्रोत अक्षुण्ण रहता है।

विनिमय सुलभता तात्विक एवं व्यवहारिक रूप में श्रम नियोजन व श्रम विनिमय से श्रुतीकृत है। यह मूल्य व मूल्यांकन पक्ष से सलभ हो जाता है। प्राकृतिक ऐश्वर्य पर ही मनुष्य के श्रम का नियोजन होता है और उसमें मनुष्य-मनुष्य के साथ किया गया श्रम सेवा के रूप में प्रायोजित होता है। उपयोगिता एवं कला का मूल्य प्रकाशित होता है। मनुष्य-मनुष्य के साथ किया गया श्रम सेवा के रूप में प्रायोजित होता है। संपूर्ण ऐश्वर्य अपने में प्रकाशन है। दर्शक के दर्शन के लिए दृश्य है। मूल्यों के आदान प्रदान में ही व्यवसाय व्यवहार एवं विचार संपन्न होता है। स्थिति में अनुभूतियां होती है। स्थिति ही अस्तित्व के रूप में अभिहित है। वस्तु मूल्य के अर्थ में विनिमय, मानव मूल्य अथवा समाज मूल्य के अर्थ में न्याय व्यवस्था चरितार्थ होती है। न्याय, आचरण व्यवहार के अर्थ में सफल होता है। न्याय की अपेक्षा ही मानवीयता के संरक्षण की अपेक्षा है। मानवीयता पूर्ण आचरण व्यवहार और स्वतंत्रता में वस्तुओं के आहरण, द्रोह, व शोषण संमुक्त होने का अभिप्राय समाहित है। विनिमय सुलभता में शोषण का भय एवं वंचना की शंकिता से मुक्त होने का अभीष्ट समाहित है। सुदूर विगत से जितने भी संविधान लैखिक व अलैखिक रूप में प्रभावशील है उन सबका आधार तात्कालीन समुदाय, वर्ग अथवा सीमित भूखंड में स्थित निवासियों के अधिकांश लोगों की सम्मति है। स्थापित सभी संविधानों के मूल में विचारात्मक अथवा दार्शनिक संबंध यथासंभव समाहित रहता है। संपूर्ण दर्शन अथवा विचार धारायें प्रकारान्तर में अधिभौतिक या भौतिकवादिता की सीमा में स्पष्ट हुई है।

पृष्ठ - 4

अब मध्यस्थ दर्शन । सह-अस्तित्ववाद। प्रस्तुत है । जिसमें ज्ञान व तत्व मीमांसा के आधार पर ज्ञानावस्था का स्पष्ट चित्रण मानव की परिभाषा एवं मानवीयता की व्याख्या संपन्न हुई है । फलतः मानवीय कार्यक्रम संस्कृति एवं सभ्यता का अध्ययन सुलभ हुआ है । इस मध्यस्थ दर्शन के घटनाक्रम मानवीयता पूर्ण आचार संहिता का मूल रूप उपलब्ध हुई है । अस्तु, वर्तमान ही शुभ, भावी पीढ़ी को मंगल मयता के अर्थ में मानवीयतापूर्ण राजनीति को अध्ययन में समाविष्ट करना ऐतिहासिक अनिवार्यता है जो एक शुभ घटना होगी । "राष्ट्रीयता को एक रखता ही राष्ट्र की आत्मा है।" मानवीय चेतना के अतिरिक्त अन्य चेतना का सार्वभौम होना संभव नहीं हुआ है । मानवीयता मानवीय परंपरा जीवन का वैभव है, जो जन्म के द्वारा सार्वभौम रूप में प्रकाशित होता है, इसलिए इसकी निरंतरता सिद्ध होती है ।

न्याय मानवीय गुणों पर, मानवीगुण-मानवीयता पर, मानवीयता गुणात्मक विकास पर, गुणात्मक विकास जीवन मूल्य पर, जीवन मूल्य जीवन धर्म पर जीवन धर्म सत्य में अनुभूत होने की क्षमता पर, सत्य में अनुभूत होने की क्षमता शिक्षा संस्कार पर, शिक्षा संस्कार शैक्षणिक क्षमता पर, शैक्षणिक क्षमता जीवन एवं जीवन धर्म के अनुसंधान पर , जीवन एवं जीवन धर्म न्याय पर आधारित पाया जाता है । अस्तु राज नीति में मानव जीवन संबंधी सभी मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धनकारी नीतियों को अध्ययन सुलभ कराना मानव की उज्वलता के अर्थ में अनिवार्य सिद्ध होता है ।

अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षावाली व्यवहार संहिता का मूल
चित्र

1. माता पिता के प्रति विश्वास निर्वाह निरंतरता :-

गौरव, कृतज्ञता, प्रेम , सरलता, सौम्यता, अनन्यता , भावपूर्वक वस्तु व सेवा के समर्पण रूप में है ।

2. पुत्र पुत्री के प्रति विश्वास निर्वाह निरंतरता :-

ममता, वात्सल्य , प्रेम, आदर, सहजता, अनन्यता भावपूर्वक वस्तु व सेवा के समर्पण के रूप में ।

3. भाई बहन की परस्परता में विश्वास निर्वाह निरंतरता :-

सम्मान, गौरव, कृतज्ञता, प्रेम, सौहार्दता, सरलता, सौजन्यता, अनन्यता, भावपूर्वक वस्तु व सेवा अर्पण के रूप में ।

पृष्ठ - 5

4. गुरू शिष्य के प्रति विश्वास निर्वाह निरंतरता :-

प्रेम, वात्सल्य, अनन्यता, सहजता, आदर, भावपूर्वक प्रबोधन प्रक्रिया सहित वस्तु व सेवा अर्पण के रूप में ।

5. शिष्य गुरू के प्रति विश्वास निर्वाह निरंतरता :-

गौरव, कृतज्ञता, प्रेम, सरलता, सौजन्यता, अनन्यता, भावपूर्वक जिज्ञासा सहित वस्तु व सेवा समर्पण के रूप में ।

6. पति-पत्नी की परस्परता में विश्वास निर्वाह निरंतरता :-

स्नेह, गौरव, सम्मान, प्रेम, निष्ठा, सौहार्द्रता अनन्यता पूर्वक सच्चरित्रता सहित वस्तु एवं सेवा अर्पण के रूप में ।

7. स्वामी सेवक के प्रति विश्वास निर्वाह व्यवस्था तंत्र में :-

स्नेह, सौजन्यता, निष्ठापूर्वक वस्तु व सेवा प्रदान के रूप में ।

8. सेवक स्वामी के प्रति विश्वास निर्वाह निरंतरता व्यवस्था तंत्र में :-

गौरव, सम्मान, कृतज्ञता, सौहार्द्रता, सौम्यता, सरलता भावपूर्वक सेवा समर्पण के रूप में ।

9. सहयता की परस्परता में विश्वास निर्वा की निरंतरता :-

स्नेह, प्रेम सम्मान, निष्ठा, अनन्यता, सौहार्द्रता, भावपूर्वक वस्तुत व सेवा समर्पण के रूप में ।

10. शासन के प्रति साहय की विश्वास निर्वाह निरंतरता :-

मानवीयतापूर्ण आचरण, व्यवहार, व्यवसायपूर्वक अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग के रूप में है ।

11. शास्त्रेकप्रति शासन की विश्वास निर्वाह निरंतरता :-

न्याय सम्मत अभयतापूर्ण जीवन के कार्यक्रम के लिए शिक्षा की सुलभता, न्याय सम्मत आचरण तथा व्यक्तित्व के संरक्षण संवर्धन प्रोत्साहन सहित अ संदिग्ध न्यायिक एवं विनिमय व्यवस्था के रूप में है ।

12. व्यवस्था व्यवस्थिति की परस्परता में विश्वास निर्वाह निरंतरता :-

शिष्ट मूल्यों पर आधारित नीति व्यवसाय मूल्यों पर आधारित व्यवस्थापूर्वक सिद्ध न्याय व समाधान सर्व सुलभता के रूप में है ।

पृष्ठ - 6

13. व्यवस्था एवं संस्कृति की परस्परता में विश्वास निर्वाह निरंतरता :-

न्याय संगत प्रक्रिया में आश्वासन, विश्वासपूर्वक न्यायानुगमन कार्यक्रम सहित व्यक्तित्व के प्रत्यापन व उसके संरक्षण के रूप में है ।

14. सभ्यता एवं संस्कृति की परस्परता में विश्वास निर्वाह निरंतरता :-

नौ स्थाई मूल्यों में, नौ शिष्ट मूल्य, नौ शिष्ट मूल्य में दो व्यवसाय मूल्यों का अर्पण समर्पण समाधान के रूप में है ।

15. सभ्यता विधि की परस्परता में विश्वास निर्वाह निरंतरता :-

प्रबुद्धता संप्रभुता के रूप में है ।